लोक-नाट्य

लोक नाट्य लोक साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है। यह लोक रंजन का अपूर्व साधन है। सामान्य जीवन में जब अवकाश के क्षण होते हैं तो इन्हीं लोक नाट्यों से मनोरंजन किया करते हैं। दिन भर की परिश्रम जन्य क्लान्ति, चिन्ताओं और अवसाद से त्राण मनुष्य इस प्रकार के मनोरंजक कार्यक्रमों में पाता है। प्राय सभी देशों में लोक जीवन, लोक नाट्यों की झंकार से गुंजीत है। ग्रामीण जीवन में तो यह आगर-बेली के सदृश्य फैले हुए होते हैं जो बाह्य आडम्बर एवं तड़क-भड़क से अलग हटकर लोक जीवन के विविध पक्षों का मार्मिक उद्घाटन बड़ी सरलता से से करते हैं। यही कारण है कि लोक साहित्य की अन्य शाखाओं की अपेक्षा लोक-नाट्यों की लोक जीवन में अधिक प्रतिष्ठा तथा महत्ता होती है। उसके लोकप्रियता एवं रसोद्रेक की क्षमता अधिकाधिक परिणाम में रस प्रदान करने से बढती है। इनके द्वारा ऐसे वातावरण का निर्माण हो जाता है जिससे इनके प्रदर्शन के समय दर्शकों को स्वत: आनन्द की उपलब्धि होती रहती है। उनके भीतर सहज ही इस का संचार होता रहता है।

लोक-नाट्य की परम्परा अति प्राचीन है। वैदिक काल से ही इसकी उत्पति का इतिहास आरम्भ होता है। का इतिहास आरम्भ होती है। इसकी उत्पत्ति के संबंध

Scanned by CamScanner

में भरत मुनि के 'नाट्य शास्त्र' में उल्लेख है - इन्द्र देवताओं ने ब्रह्मा से मनोविनोद का ऐसा साधन उत्पन्न करने की प्रार्थना की जो श्रव्य और दृश्य दोनों हो और जिससे सभी वर्णों के व्यक्तियों का मनोरंजन हो सके। ब्रह्मा ने सभी वर्णों के मनोरंजन के लिए ही एक सार्वभौमिक 'पंचमवेद' नाटक का प्रणयन किया।"

इन्हीं लोक नाट्यों के द्वारा जनता की अधिकाधिक ज्ञानेन्द्रियाँ परिपुष्ट होती रहती हैं और उन्हें रस बोध होता रहता है। सम्भवतः यही कारण है कि लोक नाट्यों की जड़ जन-जीवन में इतनी गहराई तक जम चुकी है कि वहाँ से उसे निकाल पाना बहुत मुश्किल है। अभिनय, परिसंवाद, गीत एवं अन्य नाटकीय विधानों की सहायता से लोक जीवन का विशुद्ध चित्रण एवं मनोरंजन नाटकों का प्रधान लक्ष्य होता है। लोक जीवन के विभिन्न पर्वों, त्योहारों एवं अन्य मांगलिक और उल्लासपूर्ण घड़ियों में इन्हें अभिनीत करना इस बात का पक्का सबूत है कि सभी मंडलियाँ मिलकर सहयोगपूर्वक नाटक का अभिनय करते हैं। जहाँ कोई विशेष मंडली नहीं होती वहाँ भी नाटकों को सफल तथा प्रभावशाली बनाने के उद्देश्य से सामूहिक सहयोग एवं चेतना की आवश्यकता होती है। वेदों में भी नाटकीय तत्वों के बीज प्राप्त

Scanned by CamScanner

होते हैं। गीत, नृत्य और अभिनय के तत्व तो वेदों में मिलते ही हैं और इन्ही के योग से नाटक का जन्म हुआ। लोक जीवन और लोक संस्कृति से पूर्णरूपेण सम्बद्ध होने के कारण संसार के प्रायः सभी देशों में लोक नाट्य अपने विविध रूपों में प्राचीन काल से ही परिव्याप्त है। भारत में भी विविध रूपों में लोक जीवन में समाहित एवं आदृत हुआ है। महाराष्ट्र के ललित और तमाशा, गुजरात के भवाई, राजस्थान के कठपुतली और ख्याल, मालवा का माँच। बंगाल की जात्रा, ब्रज का रास, उत्तरप्रदेश की रामलीला, मिथिला के जट-जटिन तथा श्यामा चकेवा, छोटानागपुर में छउ आदि लोकनाट्यों के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। साहित्यिक नाटक भी इन नाट्यों से बहुत कुछ ग्रहण करते हैं। आज के इस वैज्ञानिक एवं तकनीकि युग में भी ग्रामीण क्षेत्रों में भी ग्रामीण क्षेत्रों में ये लोक नाट्य पूर्ववत अभिनीत होते हैं। और जनता का मनोरंजन करते हैं। सम्पूर्ण भारत भूमि में फैले नाट्यों की प्राचीन परम्परा अपने विविध रूपों में विद्यमान है जिसके द्वारा जन-जन का जीवन सर्वदा रसमय बना रहता है। कई विद्वानों ने जन-सामान्य के मनोरंजन के अपूर्व साधन के रूप में नाट्यों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है।

Scanned by CamScanner